आधुनिक पद्य

1. मैथिलीशरण गुप्त

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म सन् 1886 में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के अंतर्गत स्थित चिरगाँव नामक गाँव में हुआ था। आपके पिता एक निष्ठावान वैष्णव भक्त तथा व्रजभाषा के मर्मज्ञ कवि थे। अतः उन्हीं संस्कारों का गहरा प्रभाव आप पर भी पड़ा था। कविता करने की प्रेरणा भी आपको अपने पिता से ही प्राप्त हुई थी। आपकी शिक्षा-दीक्षा घर पर ही हुई।

खड़ीबोली कविता के क्षेत्र में आपको प्रकाश में लाने का श्रेय स्वर्गीय महावीर प्रसाद द्विवेदी को प्राप्त है।

आप मुख्यतः राष्ट्रीय कवि के नाम से प्रसिद्ध हैं। आपने सुप्त भारत को जागृत करने का सफल प्रयत्न किया था। आपकी 'भारत-भारती' राष्ट्रीय भावनाओं का मूर्त रूप है। आपने 'साकेत' नाम से एक महाकाव्य का प्रणयन किया था, जो खड़ीबोली के गौरव-ग्रंथों में अपना अनुपम स्थान रखता है। इस काव्य पर आपको हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ था। आप संसद के सदस्य भी रह चुके हैं।

रस्कार भी प्राप्त हुआ था। आप संसद के सदस्य भी रह चुके हैं।

आपके अन्य काव्य-ग्रन्थों में 'यशोधरा', 'जयद्रथवध', 'जयभारती', 'पंचवटी', 'पृथ्वीपुत्र', 'किसान' आदि उल्लेखनीय हैं। आप बंगाल भाषा के भी विद्वान थे। माइकेल मधुसूदन दत्त कृत 'मेघनाद-वध' नामक प्रबंध-काव्य का सुन्दर काव्यानुवाद भी आपने प्रस्तुत किया था।

आपका देहावसान सन् 1964 में हुआ।

मनुष्यता

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी,
मरो, परंतु यों मरो कि याद जो करें सभी।
हुई न यों सुमृत्यु तो वृथा मरे, वृथा जिए,
मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए।

Scanned with CamScanner

वही पशु-प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती,
उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती।
उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती,
तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती।
अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
क्षुधार्थ रतिदेव ने दिया करस्थ थाल भी,
तथा दधीचि ने दिया परार्थ अस्थिजाल भी।
उशीनर क्षितीश ने स्वमांस दान भी किया,
सहर्ष वीर कर्ण ने शरीर-चर्म भी दिया।
अनित्य देह के लिए अनादि जीव क्या डरे?
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे।।
सहानुभूति चाहिए, महाविभूति है यही;
वशीकृता सदैव है बनी हुई स्वयं मही।
विरुद्धवार बुद्ध का दया-प्रवाह में बहा,
विनीत लोकवर्ग क्या न सामने झुका रहा?
अहा! वही उदार है परोपकार जो करे,
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे!!

शब्दार्थ :-

मर्त्य - मरनेवाला, नश्वर; वृथा -व्यर्थ, बेमतलब; पशु-प्रवृत्ति - जानवरों का-सा व्यवहार; बखानना - प्रशंसा करना; कृतार्थ - कार्य हो जाने से प्रसन्न, संतुष्ट; कूजना - मधुर ध्वनि करना; अखंड - संपूर्ण, पूरा; क्षुधार्थ - भूख से व्याकुल; रतिदेव - एक परम दानी राजा; करस्थ - हाथ में स्थित; दधीचि - एक ऋषि; परार्थ - दूसरे के लिए; उशीनर - देश-विशेष; क्षितीश - राजा; अनित्य - अस्थायी, नश्वर; अनादि - जिसका आदि न हो, जो सदा के लिए हो।

Scanned with CamScanner

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. कवि मैथिलीशरण गुप्त पशु-प्रवृत्ति किसे कहते हैं ?
2. दधीचि ने किसके लिए अपना अस्थिजाल दिया ?
3. कवि मैथिलीशरण गुप्त के विचार में मनुष्य कौन हैं ?
4. कवि मैथिलीशरण गुप्त किनको उदार मानते हैं ?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. विचार लो ..... मनुष्य के लिए मरे।।
2. क्षुधार्थ रतिदेव ..... मनुष्य के लिए मरे।।

पाठेतर कार्य

★ मनुष्यता के संबंध में आप अपना विचार व्यक्त करते हुए वर्ग के अन्य छात्रों से चर्चा कीजिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ खड़ीबोली के स्वरूप-निर्धारण और विकास में गुप्तजी का योगदान अन्यतम है। खड़ीबोली को उसकी प्रकृति के भीतर ही सुंदर-सुघड़ रूप देकर काव्योपयुक्त रूप प्रदान करने का आपने सफल प्रयत्न किया है। आज जिस संपन्न भाषा के हम अनायास उत्तराधिकारी हैं, उसे काव्य-भाषा के पद पर प्रतिष्ठित करनेवाले प्रथम कवि हैं आप।

Scanned with CamScanner

2. जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जन्म सन् 1889 में काशी में हुआ। वे विद्यालयी शिक्षा केवल आठवीं कक्षा तक प्राप्त कर सके, किंतु स्वाध्यायन द्वारा उन्होंने संस्कृत, पाली, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्व के वे प्रकांड विद्वान थे।

प्रसादजी अत्यंत सौम्य एवं शांत प्रकृति के व्यक्ति थे। वे परनिंदा एवं आत्मस्तुति दोनों से सदा दूर रहते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मूलतः वे कवि थे, लेकिन उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया है।

प्रसाद कृत साहित्यिक रचनाओं में राष्ट्रीय जागरण का स्वर प्रमुख है। भारतीय संस्कृति का गौरव गुण गान करते कभी नहीं थकते थे। उनकी कविताओं, कहानियों में भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों की झलक मिलती है। प्रसाद ने कविता के साथ-साथ नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – **अजातशत्रु, स्कंदगुप्त, चंद्रगुप्त, राजश्री, ध्रुवस्वामिनी** (नाटक), **कंकाल, तितली, इरावती** (उपन्यास), **आँधी, इंद्रजाल, छाया, प्रतिध्वनि और आकाशदीप** (कहानी संग्रह), **काव्य और कला तथा अन्य निबंध** (निबंध संग्रह), **झरना, आँसू, लहर, कामायनी, कानन कुसुम और प्रेमपथिक** (कविताएँ)।

आपका देहांत सन् 1937 में हुआ।

मधुमय देश हमारा

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा!
लघु सुरधनु से पंख पसारे शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणा जल।

Scanned with CamScanner

लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।
हेम कुंभ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते जब जगकर रजनी भर तारा।

शब्दार्थ :–

अरुण - लाल; मधुमय - मधुर, मीठा; क्षितिज - वह जगह, जहाँ ज़मीन और आसमान मिलते नज़र आते हैं; सहारा - आश्रय, आसरा; तामरस - सोना; विभा - प्रकाश, रोशनी; तरुशिखा - पेड़ों की शाखाओं का अग्र भाग; सुरधनु - इंद्र-धनुष; मलय - दक्षिण का एक पर्वत; समीर - हवा; खग - चिड़िया; नीड़ - घोंसला; अनंत - समुद्र; हेम - स्वर्ण, सोना; मदिर - मस्ती पैदा करनेवाला; रजनी - रात

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. कवि प्रसाद के अनुसार अनजान क्षितिज को कहाँ पहुँचने पर सहारा मिलता है?
2. अनंत की लहरें कहाँ टकराती हैं?
3. कवि उड़ते खगों के पंखों की तुलना किससे करते हैं?
4. मनोहर तरुशिखा किसपर नाच रही है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. लघु सुरधनु से पँख ..... नीड़ निज प्यारा।
2. हेम कुंभ ले उषा ..... रजनी भर तारा।

पाठेतर कार्य

★ भारत की प्राकृतिक सुंदरता का वर्णन अपनी ओर से करते हुए 15 वाक्यों का एक लेख लिखें और उसे अपने सहपाठियों को पढ़कर सुनाएँ।

अतिरिक्त जानकारी

➢ जयशंकर प्रसाद का लिखा महाकाव्य 'कामायनी' संसार की श्रेष्ठ साहित्य-कृतियों में गिना जाता है।

➢ 'आँसू' प्रसाद जी का श्रेष्ठ गीतिकाव्य है। इसका प्रथम संस्करण सन् 1925 ई. में निकला था।

Scanned with CamScanner

3. महादेवी वर्मा

महादेवी वर्मा का जन्म सन् 1907 को हुआ। हिन्दी के आधुनिक साहित्य में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। ये आधुनिक मीरा कहलाती हैं।

महादेवी जी एक संपन्न और सुशिक्षित परिवार की हैं। आपने एम.ए. परीक्षा पास की और महिला-विद्यापीठ, प्रयाग की प्रिन्सिपल बनीं। आपकी वजह से विद्यापीठ की अच्छी ख्याति हुई है। आप 'चाँद' की संपादिका भी रह चुकी हैं। आपने बड़ी दक्षता के साथ उसका संपादन किया।

अब, तक आपकी 'नीहार', 'रश्मि', 'नीरजा', 'सांध्यगीत', 'यामा', 'दीपशिखा', – आदि काव्य–रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। हाल में 'अतीत के चल-चित्र' और 'स्मृति की रेखाएँ' नाम से आपके गद्य–ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए हैं। उनके गद्य ग्रंथों का अध्ययन करने से हमें ऐसा लगता है मानो कवियित्री ने कविता-लोक से उतरकर वास्तविक लोक में प्रवेश किया हो।

महादेवी रहस्यवादी कवयित्री हैं। इस दृश्य-जगत से दूर दार्शनिक जगत की इनकी कविता पूर्णतः भावमय होती है। विषाद तथा करुणा की छाया तो प्रत्यक्ष है ही। आपके बारे में रामनरेश त्रिपाठी ने लिखा है – "मीरा के बाद हिन्दी के किसी कवि ने विरह का ऐसा उन्मादकारी वर्णन नहीं किया है जैसा महादेवीजी ने।"

आप कवयित्री ही नहीं, सुन्दर चित्रकार भी हैं। 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा' में आपके रचित सुन्दर चित्र भी छपे हैं। छपाई व सुन्दरता की दृष्टि से तो 'दीपशिखा' एक अमूल्य ग्रंथ है।

आपका निधन सन् 1987 में हुआ।

श्यामल बादल

कहाँ गया वह श्यामल बादल?
जनक मिला था जिसको सागर,
सुधा सुधाकर मिले सहोदर,
चढ़ा व्योम के उच्च शिखर तक
वात संग चंचल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

Scanned with CamScanner

इन्द्रधनुष परिधान श्याम तन,
किरणों के पहने आभूषण,
पलकों में अगणित सपने ले
विद्युत् के झलमल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

तृषित धरा ने इसे पुकारा,
विकल दृष्टि से इसे निहारा,
उतर पड़ा वह भू पर लेकर
उर में करुणा नयनों में जल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

अब हम ढूँढ़ कहाँ पाएँगे?
सब मिल हमको बहकाएँगे!
पल्लव फूल कहेंगे हँसकर
रंगों में खोया वह निश्चल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

हम बादल कहते सरिता-सर,
कण कण कहता हम उसका घर,
धरती कहती रोम रोम में
समा गया है वह चिर उज्ज्वल!
करुणामय चिरजीवी बादल!
कहाँ गया वह श्यामल बादल?

शब्दार्थ :-

बादल - मेघ, मेह; जनक - जन्मदाता, पिता; सुधा - अमृत, जल; सुधाकर - चन्द्रमा; सहोदर - सगा भाई; व्योम - आकाश; वात - हवा; संग - साथ; चंचल - चलायमान, अस्थिर; परिधान - कपड़ा, वस्त्र; आभूषण - गहना, ज़ेवर; पलक - नयनपट; विद्युत - बिजली; झलमल - चमक-दमक; तृषित - प्यासा; निहारना - देखना; बहकाना - पथ भ्रष्ट करना; समाना - भरना; उज्ज्वल - दीप्तिमान; चिरजीवी - दीर्घायु, अमर

Scanned with CamScanner

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. बादल के जनक कौन और सहोदर कौन-कौन हैं?
2. कवयित्री बादल के श्याम तन का परिधान किसे कहती हैं?
3. तृषित धरा ने जब पुकारा, तब बादल नयनों में क्या लेकर भू पर उतरे?
4. धरती के रोम-रोम में कौन समा हुआ है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :-

1. तृषित धरा ने ..... वह श्यामल बादल?
2. हम बादल कहते ..... चिरजीवी बादल!

पाठेतर कार्य

★ वर्षा-जल के संरक्षण की आवश्यकता पर 20 वाक्य लिखिए।

★ वर्षा के लिए वन-संरक्षण की आवश्यकता संबंधी ज्ञान पुस्तकालय की पुस्तकों से प्राप्त कीजिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ "मैं जो लिखती आ रही हूँ, उसके अतिरिक्त कुछ और लिखना मेरे लिए संभव नहीं था। मनुष्य ही कविता नहीं रचता, कविता भी मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण करती है और अंत में काल-प्रवाह के जिस तट पर कविता कवि को पहुँचा देती है, वहाँ वह संपूर्ण व्यक्तित्व पा लेता है।" – **महादेवी वर्मा**

Scanned with CamScanner

4. सुमित्रानंदन 'पंत'

पंत जी का जन्म ई. सन् 1900 में उत्तर प्रदेश के अलमोड़ा ज़िले के सुरम्य पर्वतीय अंचल में स्थित कौसानी नामक गाँव में हुआ था। प्रकृति की गोद में आपका शैशव बीता और प्रकृति से ही आपको कविता करने की प्रेरणा मिली। अतः आपकी कविता में प्रकृति की रमणीयता, सरलता, सुकुमारता तथा स्निग्धता के दर्शन होते हैं। आपने स्वतंत्र अध्ययन के द्वारा ही अपने ज्ञान का विस्तार किया।

आप छायावाद तथा प्रगतिवाद के प्रवर्तकों में एक माने जाते हैं। हिन्दी के मूर्धन्य कवि प्रसाद और निराला की पंक्ति में आदर के साथ आपका नाम लिया जाता है। युग की परिस्थितियों के अनुरूप आपकी वाणी में भी परिवर्तन हो गया था। आप मार्क्स तथा गाँधीजी के विचारों से काफ़ी प्रभावित हुए। आप योगी अरविन्द के दर्शन के समर्थक थे।

आपकी भाषा सरस, मधुर एवं कोमल है। खड़ीबोली कविता को लालित्य एवं कोमलता प्रदान करने का श्रेय आप ही को है। आपके कविता-संग्रहों में 'पल्लव', 'वीणा', 'गुंजन', 'युगवाणी', 'ग्राम्या', 'स्वर्णकिरण', 'रजतशिखर' और 'शिल्पी' आपके गीतिनाट्य हैं तथा 'गद्य पथ' नाम से आपके निबंधों का एक संग्रह भी प्रकाशित हो चुका है। काव्य के लिए आप 'ज्ञानपीठ' पुरस्कार से अलंकृत हुए हैं।

आपका देहांत सन् 1979 में हुआ।

चिरंतन जीवन-चक्र

निर्भय हो, निर्भय मानव!
निर्भीक विचर पृथ्वी पर,
विचलित मत हो विघ्नों से,
निज आत्मा पर रह निर्भर!

है पूर्ण सत्य अविनश्वर,
है पूर्ण सत्य रे नश्वर,
है पूर्ण सत्य यह मानव,
है पूर्ण निखिल सचराचर!

Scanned with CamScanner

मत हो विरक्त जीवन से,
अनुरक्त न हो जीवन पर,
जग परिधि मात्र जीवन की,
स्थिति केन्द्र अमर उर भीतर!

बन शांत, धीर, क्षमतामय,
बन स्नेही, सहृदय, सहचर,
गुण-दोष-युक्त जग-जीवन,
निज गुण से पर-अवगुण हर!

बढ़ती नित घृणा घृणा से,
तू उसे प्रेम से दे भर,
है दीप दीप से जलता!
है प्रेम प्रेम पर निर्भर!

निश्चल आत्मा है अक्षय,
निश्चल मृण्मय तन नश्वर
यह जीवन चक्र चिरंतन,
तू हँस-हँस जी, हँस-हँस मर!

शब्दार्थ :-

निर्भय - निडर; विचरना - चलना-फिरना; विचलित - अस्थिर, चंचल; निज - अपना; अविनश्वर - अक्षय, चिरस्थायी; निखिल - संपूर्ण, सारा; सचराचर - चर और अचर के साथ; विरक्त - उदासीन, विमुख; अनुरक्त - आसक्त; परिधि - घेरा, चहारदीवारी; उर - हृदय, वक्षस्थल, छाती; भीतर - अन्दर; सहचर - संगी, सेवक, नौकर; सहृदय - दयालु, परमार्थी; अवगुण - बुराई, ऐब; हरना - दूर करना; अक्षय - अविनाशी, अमर; मृण्मय - मिट्टी का बना हुआ; नश्वर - नष्ट हो जानेवाला; चिरंतन - शाश्वत

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :-

1. कवि पंत के अनुसार मानव को किसपर निर्भर रहना चाहिए?
2. जग-जीवन के बारे में कवि पंत का विचार क्या है?
3. 'चिरंतन जीवन-चक्र' कविता के अनुसार बढ़ती घृणा को किससे भरा जा सकता है?
4. कवि पंत के अनुसार दूसरों का अवगुण कैसे दूर किया जा सकता है?

Scanned with CamScanner

II. **कवि-परिचय दीजिए।**

III. **कविता का सारांश लिखिए।**

IV. **संदर्भ सहित भाव समझाइए :–**

1. बन शांत ..... पर अवगुण हर!
2. निश्चल आत्मा ..... हँस-हँस मर!

पाठेतर कार्य

★ "मानव को निर्भय होना है, विघ्नों से विचलित न होना है" – इसपर अपना विचार 15 वाक्यों में लिखिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ सन् 1931 ई. में पंत जी कालाकांकर गये और वहीं उनकी युवावस्था के सर्वश्रेष्ठ वर्ष (सन् 1931 से 1940 तक) वानप्रस्थ स्थिति में ज्ञान-साधना में पशु-पक्षियों के बीच व्यतीत हुए। यहीं उन्होंने 'ज्योत्स्ना' जैसे मनःकल्प की सृष्टि की, जो उनकी रचनाओं का केन्द्र माना जाता है।

Scanned with CamScanner

5. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

कविवर निराला का जन्म सन् 1898 में हुआ। आपने हिन्दी कविता में कई निराली बातों का समावेश किया।

पुराने छन्दों के नियमों को तोड़कर आपने नये छन्द रचे। 'निराला' आपका सार्थक नाम है। हिन्दी में 'मुक्त छन्द' के आप ही जन्मदाता माने जाते हैं।

आपके पिताजी बंगाल में नौकरी करते थे। अतः आपका जन्म और शिक्षा वगैरह वहीं हुई। आप बंगला, संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य के अच्छे विद्वान थे। दर्शन-शास्त्र (वेदान्त) के भी बड़े पंडित थे। स्वामी विवेकानन्द के विचारों से आप बहुत प्रभावित हुए थे। रवीन्द्रनाथ की कृतियों का आपने गहरा अध्ययन किया है।

आपकी कविता पर संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी काव्य का और विचारों में दार्शनिकता का स्पष्ट प्रभाव दीखता है। भाषा संस्कृत-बहुला है। अतः जहाँ विचार दार्शनिक हो जाते हैं वहाँ भाषा गंभीर हो जाती है। आपने सब तरह के विषयों पर सब रसों में सफलतापूर्वक रचनाएँ कीं। ख़ासकर आपका वीर और करुण रस अच्छा उतरा है।

'अनामिका', 'सेवा', 'नये पत्ते', 'परिमल' वगैरह कविता-संग्रह प्रकाशित हैं। इनके अलावा आपने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं। 'अप्सरा', 'अलका', 'कुल्ली भाट', 'प्रभावी' वगैरह इनके मशहूर उपन्यास हैं। 'राम की शक्ति पूजा' काव्य आपका सुंदर काव्य है।

आपने 'समन्वय' नामक दार्शनिक मासिक पत्रिका का भी सफलतापूर्वक संपादन किया है।

सन् 1961 में आप पंचतत्व में विलीन हुए।

अनंत द्वार

अभी न होगा मेरा अंत
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसंत –
अभी न होगा मेरा अंत।

हरे-हरे ये पात,
डालियाँ, कलियाँ, कोमल गात।
मैं ही अपनी स्वप्न-मृदुल-कर

Scanned with CamScanner

फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

पुष्प-पुष्प से तंद्रालस लालसा खींच लूँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको।
हैं मेरे वे जहाँ अनंत –
अभी न होगा मेरा अंत।

शब्दार्थ :–

मृदुल - कोमल, सुकुमार; पात - पत्ता; गात - अंग; प्रत्यूष - प्रभात, सवेरा; तंद्रालस - ऊँघ के कारण आलसी; लालसा - चाह, इच्छा; सहर्ष - खुशी से

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'निरालाजी' क्यों ऐसा कहते हैं कि उनका अंत अभी न होगा?
2. 'निराला' पुष्प-पुष्प से किसे खींच लेंगे?
3. 'निराला' कैसा प्रत्यूष जगाएँगे?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. हरे-हरे ये पात ..... प्रत्यूष मनोहर।

पाठेतर कार्य

★ वसंत ऋतु की प्रकृति की सुंदरता का वर्णन करते हुए 20 वाक्य लिखिए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ लिली, चतुर चमार, सुकुल की बीबी – ये 'निराला' के कहानी-संग्रह हैं और अप्सरा, अलका, प्रभावती, निरुपमा – उनके उपन्यास हैं।

➢ 'भावों की मुक्ति छंदों की भी मुक्ति चाहती है। यहाँ भाषा, भाव और छंद तीनों स्वच्छंद हैं।' – 'निराला'

Scanned with CamScanner

6. हरिवंशराय 'बच्चन'

'बच्चन' का जन्म ई. सन् 1907 में इलाहाबाद में हुआ था। आपने एम.ए., बी.टी. की परीक्षा पास की। इंग्लैंड से डाक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। आप भारत-सरकार के विदेश-मंत्रालय में कार्य भी करते थे।

'बच्चन' ने अपनी विलक्षण प्रतिभा के बल पर हिन्दी काव्य-क्षेत्र में अपने लिए एक विशिष्ट पथ का निर्माण किया है। आपके द्वारा प्रवर्तित हालावाद ने हिन्दी काव्य-जगत् को नयी शोभा प्रदान की। प्रारंभ में आपकी इस नवीन विचारधारा का घोर विरोध हुआ, किन्तु बाद को उस वाद में निहित मर्म से परिचित होने पर हिन्दी-जगत् ने आपका भव्य स्वागत किया।

'बच्चन' ने प्रारंभ में अपनी रचनाओं में मानव-जीवन की तृष्णा को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न किया, किन्तु उत्तरोत्तर आपकी दृष्टि व्यापक होती गयी। जीवन की मस्ती के गायक 'बच्चन' ने दार्शनिकता के प्रभाव के कारण उसकी विविधता का भी सहज एवं गंभीर चित्र अपने गीतों के माध्यम से उपस्थित किया है। हृदय के सरल उद्‌गारों को व्यक्त करने में आपको सफलता प्राप्त हुई है।

'मधुशाला', 'मधुबाला', 'मधुकलश', 'बंगाल का काल', 'निशा-निमंत्रण', 'एकांत-संगीत', 'सतरंगिणी', 'खादी के फूल', 'सूत की माला', 'मिलन यामिनी', 'तेरा हार', 'आकुल अंतर', 'सोपान' आदि आपके काव्य-संग्रह हैं। आप एक उच्चकोटि के कवि एवं गीतिकार ही नहीं, अपितु एक सफल अनुवादक भी थे।

आप सन् 2003 में स्वर्ग सिधारे।

प्यार

मैंने चिड़िया से कहा, 'मैं तुम पर एक
कविता लिखना चाहता हूँ।'
चिड़िया ने मुझसे पूछा, 'तुम्हारे शब्दों में
मेरे परों की रंगीनी है?'
मैंने कहा, 'नहीं।'
'तुम्हारे शब्दों में मेरे कंठ का संगीत है?'
'नहीं।'
'तुम्हारे शब्दों में मेरे डैनों की उड़ान है?'

Scanned with CamScanner

'नहीं।'
'जान है?'
'नहीं।'
'तब तुम मुझपर कविता क्या लिखोगे?'
मैंने कहा, 'पर तुमसे मुझे प्यार है।'
चिड़िया बोली, प्यार का शब्दों से क्या सरोकार है?'
एक अनुभव हुआ नया।
मैं मौन हो गया!

शब्दार्थ :–

पर - पंख; रंगीन - चमकदार; कंठ - गला; डैना - पंख; जान - प्राण; सरोकार - संबंध

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'बच्चन' किसपर कविता लिखना चाहते थे?
2. क्या 'बच्चन' के शब्दों में चिड़िया के कंठ का संगीत है?
3. 'बच्चन' चिड़िया पर कविता क्यों लिखना चाहते थे?
4. 'बच्चन' अंत में मौन क्यों हुए?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. "तब तुम मुझपर ..... मौन हो गया।"

पाठेतर कार्य

★ प्यार का, शब्दों सरोकार है या नहीं? इसपर 10 वाक्य लिखें और उसे अपने अध्यापक और अन्य सहपाठियों को पढ़ सुनाएँ।

अतिरिक्त जानकारी

➢ बच्चन जी ने 1952 से 54 तक इंग्लैंड में रहकर' केंब्रिज विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की।

Scanned with CamScanner

7. रामधारीसिंह 'दिनकर'

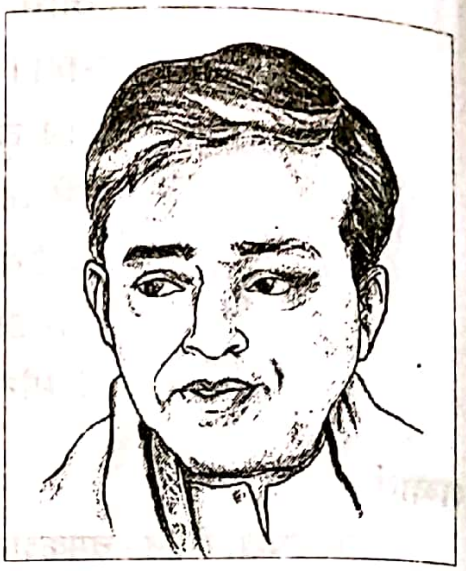

दिनकरजी का जन्म बिहार प्रांत के मुंगेर ज़िले में स्थित सिमरियाघाट नामक स्थान में सन् 1908 में हुआ। दिनकर की प्रखरता और तेजस्विता के दर्शन आपकी कविता में होते हैं। इतिहास आपका प्रिय विषय रहा है। अतः भारत के अतीत की गरिमा का स्मरण दिलाकर वर्तमान के साथ उसकी तुलना करते हुए हमारे पतन पर कविवर आठ-आठ आँसू रोये हैं। आपकी कविताओं में राष्ट्र का स्वर जैसा मुखरित हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। किन्तु आपकी आधुनिक कविताओं में भावना की अपेक्षा चिंतन का दबाव अधिक दिखाई देता है।

दिनकर की कविता में ओज और तेज पढ़ते ही बनते हैं। भाषा पर आपका असाधारण अधिकार है। आपने युद्ध और शांति की समस्या को लेकर चिंतन-प्रधान प्रबन्ध-काव्य का प्रणयन किया है जो 'कुरुक्षेत्र' नाम से विख्यात है। आपकी कीर्ति का हेतु यही काव्य है। आपके अन्य प्रबन्ध-काव्यों में 'रश्मिरथी' और 'ऊर्वशी' उल्लेखनीय हैं। आप संसद के सदस्य तथा भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रह चुके।

आपकी राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताओं में 'हिमालय', 'नई दिल्ली', 'नेताजी', 'विपथगा', 'सामधेनी', 'नीलकुसुम', 'रसवंती', 'द्वंद्वगीत', 'इतिहास के आँसू' आदि प्रसिद्ध हैं। 'संस्कृत के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर', 'अर्धनारीश्वर' आदि आपके गद्य-ग्रंथ हैं।

सन् 1974 में आपका निधन हुआ।

काँटों में राह बनाते हैं

सच है विपत्ति जब आती है
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते
क्षण एक नहीं धीरज खोते।

विघ्नों को गले लगाते हैं,
काँटों में राह बनाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में
टिक सके आदमी के मग में,
खम ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पाँव उखड़।

Scanned with CamScanner

मानव जब ज़ोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुण बड़े एक से एक प्रखर
हैं छिपे मानवों के भीतर,
मेहंदी में जैसे लाली हो
वर्तिका बीच उजियाली हो।

बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

शब्दार्थ :–

विपत्ति - संकट, बुरे दिन; कायर - डरपोक, भीरु; सूरमा - वीर, योद्धा; विचलित - अस्थिर, चंचल; धीरज - धैर्य; विघ्न - बाधा, अड़चन; राह - रास्ता, मार्ग; मग - मार्ग; खम ठोंक - दृढतापूर्वक; प्रखर - खरा, उत्तम; वर्तिका - बत्ती

अभ्यास

I. प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखिए :–

1. 'दिनकर' के अनुसार विपत्ति किसको दहलाती है?
2. क्या आदमी के मग में कोई विघ्न टिक सकता है?
3. पत्थर कब पानी बनता है?
4. 'काँटों में राह बनाना' – इसका तात्पर्य क्या है?

II. कवि-परिचय दीजिए।

III. कविता का सारांश लिखिए।

IV. संदर्भ सहित भाव समझाइए :–

1. सच है विपत्ति ..... नहीं धीरज खोते।
2. गुण बड़े एक से ..... उजियाली हो।

पाठेतर कार्य

★ संसार के किसी महापुरुष के, जिन्होंने अपने जीवन में आयी कठिनाइयों को हटाया और आनेवाली पीढ़ी का आदर्श बना, वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन करते हुए 20 वाक्य लिखिए और अपनी कक्षा में दूसरों को पढ़ सुनाइए।

अतिरिक्त जानकारी

➢ 'दिनकर' की गद्य-कृतियों में मुख्य है उनका विराट् ग्रंथ 'संस्कृति के चार अध्याय', जिसमें आपने प्रधानतया शोध और अनुशीलन के आधार पर मानव सभ्यता के इतिहास का, चार मंज़िलों में विभाजित किया है। इस ग्रंथ के लिए आप साहित्य अकादमी के पुरस्कार से सम्मानित हुए।

Scanned with CamScanner

प्राचीन पदय

20. कबीर के दोहे

(1)

हम तुम्हारो सुमिरन करैं, तुम मोहिं चितवौ नाहिं।
सुमिरन मन की प्रीति है, सो मन तुमहीं माहिं।।

शब्दार्थ :– तुम्हरो - तुम्हारा; सुमिरन - स्मरण, ध्यान; चितवौ नाहिं - देखते नहीं हो; सो - वह; माहिं - में, अन्दर

भावार्थ :– (जीवात्मा परमात्मा से कहती है) मैं तो तुम्हारा स्मरण करती रहती हूँ, पर तुम मेरी ओर देखते तक नहीं। स्मरण तो मन की प्रीति है और मेरा मन तुम्हीं में लगा है। अर्थात् मैं हमेशा तुम्हारा ही ध्यान किया करती हूँ।

(2)

हंसा बगुला एकसा, मानसरोवर माहिं।
बगा ढ़ँढोरे माछरी, हंसा मोती खाहिं।।

शब्दार्थ :– बगा - बगुला; ढँढोरे - खोजता है; खाहिं - खाता है

भावार्थ :– एक ही मानसरोवर में हंस भी रहता है और बगुला भी। लेकिन जब बगुला मछली की ही खोज में रहता है, हंस मोती खाता है। अर्थात् स्वभाव के गुण-दोष के अनुसार ही आदमी के कर्म होते हैं।

(3)

हीरा परा बजार में, रहा छार लपटाय।
बहुतक मूरख चलि गये, पारखि लिया उठाय।।

शब्दार्थ :– परा - पड़ा; छार - राख या धूल; बहुतक - बहुत से; पारखि - पारखी, जौहरी

भावार्थ :– बाज़ार में धूल से लिपटा हुआ हीरा पड़ा था। बहुत-से मूर्ख आये और चले गये, लेकिन जब एक जौहरी की निगाह में वह आया तो उसने तुरन्त उसे उठा लिया। आशय है कि ज्ञानी ही किसी वस्तु की क़दर कर सकता है।

Scanned with CamScanner

(4)

दुख में सुमिरन सब करैं, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करै, तो दुख काहे होय।।

शब्दार्थ :- कोय - कोई; काहे - क्यों

भावार्थ :- दुख के दिनों में तो सभी ईश्वर को याद करते हैं, लेकिन सुखमय दिनों के आने पर कोई वैसा नहीं करता। अगर लोग सुख में भी ईश्वर को याद रखें, तो फिर दुख के दिन आ ही कैसे सकते हैं?

(5)

छिमा बड़न को चाहिए, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात।।

शब्दार्थ :- छिमा - क्षमा; बड़न - बड़े; छोटन - छोटे; कहा - क्या; घटि गयो - घट गया, बिगड़ गया

भावार्थ :- जो छोटे होते हैं वे उपद्रवी होते ही हैं, लेकिन बड़ों को क्षमाशील होना चाहिए। भृगु मुनि ने भगवान विष्णु की छाती पर लात मारी थी, इससे उनका क्या बिगड़ गया? क्षमाशीलता के कारण विष्णु की ही महानता प्रकट हुई।

(6)

कथनी थोथी जगत में, करनी उत्तम सार।
कह कबीर करनी सबल, उतरे भौजल पार।।

शब्दार्थ :- कथनी - कथन, उपदेश; थोथी - निकम्मी, सारहीन; करनी - कर्म, आचरण; भौजल - भवसागर

भावार्थ :- इस संसार में उपदेश देना बिलकुल निकम्मी चीज़ है और उत्तम आचरण करना ही सार वस्तु है। कबीर कहते हैं कि उत्तम आचरण के बल पर ही मनुष्य भवसागर से पार उतर सकता है।

(7)

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपना, मुझसा बुरा न कोय।।

शब्दार्थ :- देखन - देखने के लिएं; मिलिया - मिला

Scanned with CamScanner

भावार्थ :– मैं बुराई देखने के लिए संसार-भर में घूमा, पर कोई भी बुरा आदमी नहीं मिला। और जब अपने ही दिल को टटोलने लगा, तो ऐसा अनुभव हुआ कि मुझसे बुरा कोई नहीं हो सकता। तात्पर्य यह है कि मनुष्य को दूसरे में दोष देखने के बजाय अपने ही दोषों को देखना चाहिए।

(8)

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

शब्दार्थ :– फेरत - फेरते हुए; जुग - युग, समय; भया - बीत गया; फेर - चक्कर; मनका - मणिमाला; डारि दे - फेंक दे

भावार्थ :– माला फेरते हुए समय बीत गया, फिर भी मन का चक्कर बंद नहीं हुआ, वह तृष्णाओं के पीछे भटकता ही रहता है। इसलिए अब तू हाथ की माला फेंक दे और मन की माला फेर। अर्थात्, साधक को पहले मन विकाररहित करके जप-तप में लगना चाहिए।

(9)

बाँबी कूटे बावरे, साँप न मारा जाय।
मूरख बाँबी ना डसे, सर्प सबन को खाय।।

शब्दार्थ :– बाँबी - साँप के रहने का बिल, वल्मीक; बावरे - पागल; डसे - काटता है

भावार्थ :– पागल! तुम साँप को मारना छोड़कर बिल को मारते हो! रे मूर्ख! बिल प्राणी को नहीं डसता, पर सर्प सबको खा जाता है।

(10)

सीतल शब्द उचारिये, अहम् आनिये नाहिं।
तेरा प्रीतम तुज्झ में, सत्रू भी तुझ माहिं।।

शब्दार्थ :– सीतल - मधुर; उचारिये - बोलिये; अहम् - अभिमान

भावार्थ :– हृदय में अभिमान लाये बिना मीठी वाणी बोलो, क्योंकि शब्द (मीठे और कडुए) के रूप में तेरा प्रियतम (मित्र) और तेरा शत्रु दोनों तुझमें ही हैं।

Scanned with CamScanner

21. तुलसी के दोहे

(1)

तुलसी तरु फूलत फलत, जेहि विधि कालहिं पाय।
तैसे ही गुन दोस गत, प्रगटत समय सुभाय।।

शब्दार्थ :– जेहि विधि - जिस प्रकार; कालहिं पाय - समय पाकर; तैसे ही - वैसे ही; सुभाय - स्वभाव

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष समय पाकर फलता-फूलता है, उसी तरह हरेक आदमी के स्वभाव के गुण-दोष समय आने पर ही प्रकट होते हैं।

(2)

गुरु तें आवत ग्यान उर, नासन सकल विकार।
यथा निलय गत दीप तें, मिटत सकल अँधियार।।

शब्दार्थ :– आवत - आता है, उदय होता है; ग्यान - ज्ञान; नासन - नष्ट करने के लिए; सकल - सब; विकार - दोष; यथा - जैसे; निलय - मकान

भावार्थ :– मन के सारे मलिन विकारों को नष्ट करने के लिए ही गुरु के द्वारा हृदय में ज्ञान प्रकट होता है, जिस प्रकार कि मकान में रखे हुए दीपक से सारा अंधेरा दूर हो जाता है।

(3)

जो मधु दीन्हे तें मरे, माहुर देउ न ताउ।
जग जीति हारे परसुधर, हारि जीते रघुराउ।।

शब्दार्थ :– मधु - शहद; दीन्हे - देने; माहुर -विष; ताउ - उसे; परसुधर - परशुराम

भावार्थ :– यदि कोई शहद देने मात्र से मर जाता हो, तो उसे (मारने के लिए) विष मत दो। सारे संसार को जीतकर अन्त में परशुराम पराजित हुए; पर रामचंद्रजी (नम्रतायुक्त मीठी वाणी के प्रभाव से) उनसे पराजित होकर भी विजयी हुए।

Scanned with CamScanner

(4)

नीच चंग सम जानिबो, सुनि लखि तुलसीदास।
ढील देत महि गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास।।

शब्दार्थ :– नीच - दुष्ट आदमी; चंग - पतंग; जानिबो - समझना चाहिए; लखि - देखकर; महि - पृथ्वी

भावार्थ :– सुनने और देखने के बाद तुलसीदासजी कहते हैं कि दुष्ट आदमी को उस पतंग के समान समझना चाहिए जो ढीला छोड़ने पर पृथ्वी पर गिर पड़ता है और खींचने पर ऊपर आकाश की ओर चढ़ता है।

(5)

तुलसी निज कीरति चहहिं, पर की कीरति खोय।
तिनके मुँह मसि लागिहैं, मिटिहि न मरिहैं धोय।।

शब्दार्थ :– निज - अपना; कीरति - कीर्ति, बड़ाई; मसि - कालिख, कलंक

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि जो दूसरे की कीर्ति नष्ट कर अपनी बड़ाई चाहते हैं, उनके मुँह पर ऐसी कालिख लगेगी कि जो धोते-धोते मर जाने पर भी नहीं मिटेगी।

(6)

तुलसी झगड़ा बड़न के, बीच परहु जनि धाय।
लड़ै लोह पाहन दोउ, बीच रुई जरि जाय।।

शब्दार्थ :– परहु - पड़ो; जनि - मत; धाय - दौड़कर; जरि जाय - जल जाता है

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि बड़े आदमियों के झगड़े के बीच कभी दौड़कर मत पड़ो। लोहा और पत्थर दोनों परस्पर लड़ते हैं, पर (उन दोनों के संघर्ष से आग निकलने के कारण) उनके बीच आने पर बेचारी रूई जल जाती है।

(7)

भलो कहहिं जाने बिना, बिन जाने अपवाद।
ते नर गाँवर जानि जिय, करहु न हरख बिषाद।।

शब्दार्थ :– जाने - समझे; अपवाद - निंदा; गाँवर - गँवार, मूर्ख

भावार्थ :– जो व्यक्ति किसीको समझे बिना उसे अच्छा कहता है और उसी तरह बिना जाने उसकी निंदा करता है, उस व्यक्ति को मूर्ख समझकर हृदय में हर्ष और विषाद मत करो।

Scanned with CamScanner

(8)

दीरघ रोगी दारिदी, कटुवच लोलुप लोग।
तुलसी प्रान समान तउ, तुरत त्यागिवे जोग।।

शब्दार्थ :– दीरघ रोगी - लंवी व्याधिवाला; दारिदी - दरिद्र, गरीव; लोलुप - लालची; जोग - योग्य, लायक

भावार्थ :– तुलसीदासजी कहते हैं कि लम्वी व्याधिवाला, दरिद्र, कटु वचन वोलनेवाला और लालची आदमी अगर प्राण के समान भी प्रिय हों, तो भी वे तुरंत छोड़ देने योग्य हैं।

(9)

बरखत हरखत लोग सब, करखत लखै न कोइ।
तुलसी भूपति भानुसम, प्रजा भागबस होइ।।

शब्दार्थ :– बरखत - बरसता है; हरखत - प्रसन्न होता है; करखत - खींचता है; लखै - देखता है; भूपति - राजा; भानु - सूर्य; भागबस - भाग्यवश

भावार्थ :– सूर्य पृथ्वी से कब रस खींचता है इसे कोई नहीं देखता, किन्तु जव वही जल पुनः पृथ्वी पर बरसता है तब सब लोग प्रसन्न होते हैं। तुलसीदासजी कहते हैं कि इसी प्रकार राजा भी प्रजा के भाग्यवश (कर आदि के रूप में प्राप्त धन से प्रजा का ही कल्याण करने के कारण) सूर्य के समान होता है।

(10)

नीच निचाई नहिं तजै, जौ पावइ सतसंग।
तुलसी चंदन बिटप बसि, बिनु बिख भै न भुजंग।।

शब्दार्थ :– निचाई - दुष्टता, तजै - छोड़ता है; पावइ - पाकर; विटप-वृक्ष; बसि - रहकर; बिख - विष; भुजंग - सर्प; भै न - नहीं होता है

भावार्थ :– दुष्ट आदमी यदि सत्संगति प्राप्त कर ले, तो भी वह अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता है। तुलसीदासजी कहते हैं कि चंदन के वृक्ष पर रहने पर भी सर्प कभी विषरहित नहीं होता।

Scanned with CamScanner

23. रहीम के दोहे

(1)

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करै किन कोय।
रहिमन फाटे दुग्ध को, मथै न माखन होय।।

शब्दार्थ :– किन - यत्न; कोय - कोई; फाटे - फटा हुआ; मथै - मथने से

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार फटे हुए दूध को मथने से मक्खन नहीं मिलता, उसी प्रकार जो बात एक बार बिगड़ जाती है वह लाख यत्न करने पर भी पुनः नहीं सुधर सकती।

(2)

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम परकाज हित, संपत्ति सँचहिं सुजान।।

शब्दार्थ :– खात है - खाता है; सरवर - सरोवर; पान - जल; संचहिं - इकट्ठा करते हैं

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष स्वयं अपना फल नहीं खाता है और सरोवर अपना जल नहीं पीता है, उसी प्रकार सज्जन भी दूसरों की भलाई के लिए ही धन इकट्ठा करते हैं।

(3)

धनि रहीम जल पंक को, लघु जिय पियत अघाय।
उदधि बड़ाई को कहै, जगत् पियासो जाय।।

शब्दार्थ :– धनि - धन्य, श्रेष्ठ; जल पंक - तालाब; पंक - कीचड़; लघु - छोटा; जिय - जीव, जन्तु; पियत - पीकर; अघाय - तृप्त; उदधि - सागर; बड़ाई - बड़प्पन, महानता; पियासो - प्यास।

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि धन्य है वह तालाब जो छोटा है, उसका पानी पीकर कई जीव-जन्तु जीवित हैं। सागर की तारीफ़ कौन करे, जिसके पास अगाध जलराशि है, किन्तु उससे किसी की प्यास नहीं बुझती। व्यक्ति की महानता उसके गुणों से है न कि उसके आकार से।

Scanned with CamScanner

(4)

एकै साधे सब सधै सब साधे सब जाय।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलहिं फलहिं अघाय।।

शब्दार्थ :– मूलहिं - जड में; सींचबो - पानी देना; अघाय - जी-भर

भावार्थ :– एक समय में एक ही कार्य को यत्नपूर्वक करने से क्रमशः सभी कार्य सिद्ध होते हैं, लेकिन एक ही साथ सभी कार्यों में लग जाने पर एक भी कार्य पूरा नहीं होता, अर्थात् सभी विगड़ जाते हैं। रहीम कहते हैं, वृक्ष की जड को ही (नियमित रूप से) सींचने पर वह जी-भर फूल और फल देता है।

(5)

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग।।

शब्दार्थ :– कुसंग - बुरी संगति; व्यापत नहीं - प्रभाव नहीं पड़ता है; भुजंग - सर्प

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि यदि आदमी का स्वभाव उत्तम है, तो बुरी संगति उसका क्या विगाड़ सकती है? सर्प के लिपटे रहने पर भी उसके विष का चंदन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(6)

रहिमन याचकता गहै, बड़े छोट है जात।
नारायण हू को भयो, बावन आँगुर गात।।

शब्दार्थ :– याचकता गहै - याचक बनने पर; है जात - हो जाता है; आँगुर - अंगुल

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि याचक बनने पर बड़े भी छोटे हो जाते हैं। भगवान जब बलि के यहाँ याचना करने गये थे, उनका भी शरीर बावन अंगुल का हो गया था।

(7)

बड़े बड़ाई ना करैं, बड़े न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।।

Scanned with CamScanner

शब्दार्थ :– टका - रुपया; मेरो - मेरा

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जो महान होते हैं वे अपनी बड़ाई या प्रशंसा खुद नहीं करते और न बढ़-बढ़कर बातें करते हैं। हीरा श्रेष्ठ रत्न होने पर भी कब कहता है कि मेरा दाम लाख रुपया है?

(8)

रहिमन जिह्वा बावरी, कहि गइ सरग पताल।
आपु तो कहि भीतर गयी, जूती खात कपाल।।

शब्दार्थ :– जिह्वा - जीभ; बावरी - पगली; सरग - आकाश; आपु - खुद; कपाल - खोपड़ी

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जीभ तो पगली है, वह बिना विचारे आकाश-पाताल की बातें कहकर खुद तो भीतर चली गयी और खोपड़ी को जूतियाँ खाकर उसका कुफल भोगना पड़ा।

(9)

जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँडत छोह।।

शब्दार्थ :– मीनन - मछलियाँ; तऊ - फिर भी; छोह - प्रेम

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जाल को जल से निकालने पर जल तो मछलियों का मोह छोड़ अलग होकर बह जाता है, लेकिन मछलियाँ पानी का प्रेम नहीं छोड़तीं। वे उसके वियोग में तड़प-तड़पकर मर जाती हैं।

(10)

जब लगि वित्त न आपने, तब लगि मित्त न कोई।
रहिम अंबुज अंबु बिन, रवि ताकर रिपु होइ।।

शब्दार्थ :– वित्त - धन; मित्त - मित्र; अंबु - जल; ताकर - उसका

भावार्थ :– कवि रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार जल के अभाव में सूर्य भ कमल का शत्रु हो जाता है, उसी प्रकार धन नहीं है, तो कोई भी हमारा मित्र नहीं बनता।

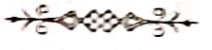

Scanned with CamScanner